चर्च ऑफ द नाजरीन

हमारे विश्वास के कथन

कथन 1
त्रियेक परमेश्वर

हम एक अनंतकालीन परमेश्वर के अस्तित्व में विश्वास करते हैं जो असीम है, संप्रभु सृष्टिकर्ता और ब्रम्हांड का संभलने वाला है; यह कि केवल वही परमेश्वर है– प्रकृति, गुणों और उद्देश्य में पवित्र। परमेश्वर जो पवित्र, प्रेम और ज्योति है, वह त्रियेक परमेश्वर है जो पिता, पुत्र और पवित्रात्मा में प्रगट होता हैं।

उत्पत्ति 1; लैव्यव्यवस्था 19:2, व्यवस्था विवरण 6:4–5; यशायाह 5:16; 6:1–7; 40:18–31; मत्ती 3:16–17; 28:19–20; यूहन्ना 14:6–27; 1 कुरिं. 8:6; 2 कुरि. 13:14; गलतियों 4:4–6; इफिसियों 2:13–18; यूहन्ना 1:5, 4:8।

कथन 2
यीशु मसीह

हम यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं जो त्रिएक परमेश्वर के ईशशीर्ष में दूसरा व्यक्ति हैं; कि वह अनंतकाल से पिता के साथ है, कि वह पवित्रात्मा के द्वारा अवतरित हुआ, मरियम नाम कुँवारी से जन्मा ताकि दो पूर्णरूप से सिद्ध स्वभाव अर्थात् ईश्वरत्व एवँ मनुष्यत्व दोनों एक ही व्यक्ति में एक साथ हों, वही परमेश्वर है और वही मनुष्य है–ईश–मानव।

हम विश्वास करते हैं कि यीशु हमारे पापों के लिये मारा गया और वह वास्तव में मृतकों में से जी उठा और पुनः देह में आया, और उन सभी बातों के साथ जिनका संबंध मनुष्य के स्वभाव (प्रकृति) की सिद्धता से है, वह स्वर्ग पर उठाया गया और वहाँ हमारे लिये मध्यस्थता करने में व्यस्त है।

मत्ती 1:20–25; 16:15–16; लूका 1:26–35; यूहन्ना 1:1–18; प्रे.काम 2:22–36; रोमियों 8:3; 32–34; गलतियों 4:4–5; फिलिप्पियों 2:5–11; कुलुस्सियों 1:12–22; 1 तीमु. 6:14–16; इब्रानियों 1:1–5; 7:22–28; 9:24–28; 1 यूहन्ना 1:1–3; 4:2–3,15।

कथन 3 पवित्रात्मा

हम पवित्रात्मा में विश्वास करते हैं कि वह त्रिएक ईश–शिर्ष का तीसरा व्यक्ति है। वह सब स्थानों में उपस्थित है और मसीह की कलीसिया में प्रभावी एवँ कुशलतापूर्वक सक्रिय हैं, वह संसार को पाप के विषय में निरूत्तर करता है और पश्चात्ताप एवँ विश्वास करनेवालों को पुर्नजीवन (नया–जन्म) देता है, विश्वासियों को पवित्र करता और यीशु में उन्हें सम्पूर्ण सत्य के मार्ग में अगुवाई करता है।

यूहन्ना 7:39; 14:15–18,26; 16:7–15; प्रे.काम 2:33; 15:8–9; रोमियों 8:1–27; गलतियों 3:1–14; 4:6; इफिसियों 3:14–21; 1 थिस्स. 4:7–8; 2 थिस्स. 2:13; 1 पतरस 1:2; 1 यूहन्ना 3:24; 4:13.

कथन 4
पवित्रशास्त्र

हम पवित्रशास्त्र के रचे जाने में पवित्रात्मा की शब्दशः प्रेरणा पर विश्वास करते है, पवित्रशास्त्र का अर्थ पुराने और नये नियम की कुल 66 पुस्तकें है, ईश्वरीय प्रेरणा से रचित, त्रुटिरहित, उद्धार के लिये आवश्यक सभी बातों में परमेश्वर की इच्छा को प्रगट करते हैं, इस कारण उसमें जो बातें नहीं है उसे विश्वास के कथन के रूप में नहीं जोड़ा जायेगा।

लूका 24:44–47; यूहन्ना 10:35; 1 कुरिन्थियों 15:3–4; 2 तीमु. 3:15–17; 1 पतरस 9:10–12; 2 पतरस 1:20–21।

कथन 5
पाप, मूल पाप और व्यक्तिगत पाप

हम विश्वास करते हैं कि हमारे प्रथम माता–पिता के अनाज्ञाकारी होने पर पाप इस संसार में आया। और पाप के द्वारा मृत्यु आई। हम विश्वास करते हैं कि पाप दो प्रकार है– मूल पाप या अनैतिकता और वास्तविक या व्यक्तिगत पाप।

हम विश्वास करते हैं कि मूल पाप या अनैतिकता का आचरण, स्वभाव या प्रकृति में विकृति के कारण है जो आदम की सभी संतानों में है। यही कारण है कि सभी मनुष्य वास्तविक या मूल धार्मिकता या सृजन के समय हमारे प्रथम माता–पिता की पवित्र दशा से बहुत दूर जा चुके है, परमेश्वर के विपरीत है, बिना आत्मिक–जीवन, बुराई में प्रवृत्त, और लगातार पाप की अभिलाषा करनेवाले है। हम आगे यह भी मानते है कि मूल पाप, पुर्नजीवन या नया–जन्म पाने के बाद भी अस्तित्व में रहते है जब तक कि मनुष्य का हृदय पवित्रात्मा के बपतिस्मे के द्वारा पूरी तरह से शुद्ध न हो जाये।

हम विश्वास करते हैं कि मूल पाप, वास्तविक पाप से भिन्न है और वास्तविक पाप के लिये विरासत या आधार के रूप में उपलब्ध है, परन्तु उनके लिये कोई भी जिम्मेदार नहीं है। यदि उनके समाधान के लिये ईश्वर की ओर से प्रदत्त उपायों की उपेक्षा या इन्कार न किया जाये।

हम विश्वास करते हैं कि वास्तविक या व्यक्तिगत पाप, नैतिक रूप से जिम्मेदार व्यक्ति द्वारा परमेश्वर की ज्ञात व्यवस्था का जानबूझकर किया गया उल्लंघन है। इस कारण वास्तविक पाप मनुष्य के पाप में पतन के कारण होने वाले प्रभावों के कारण आचरण के मानकस्तर से विचलन के पाप नहीं है। वे अनजाने में हुये पाप, जन्मजात अयोग्यता, निर्बलता, गल्तियाँ, त्रुटियाँ, असफलताओं इत्यादि से भिन्न है। ऐसे निर्दोष प्रभावों में मसीह की आत्मा के विरुद्ध होने वाली अभिवृतियाँ और प्रतिक्रियाएँ शामिल नहीं है। उन्हें उचित रीति में आत्मा के पाप कहा जा सकता हैं। हम विश्वास करते हैं कि व्यक्तिगत पाप मुख्य रूप में, आवश्यक रूप में, प्रेम की व्यवस्था का उल्लंघन है, और मसीह के साथ संबंधित पापों को हम अविश्वास के रूप में परिभाषित करते हैं।

मूल पाप : उत्पत्ति 3:6–5; अय्यूब 15:14; भजन 51:5; यिर्मयाह 17:9–10; मरकुस 7:21–23; रोमियों 1:18–25; 5:12–14; 7:1; 8:9; 1 कुरि. 3:1–4; गलतियों 5:16–25; 1 यूहन्ना 1:7–8।

व्यक्तिगत पाप : मत्ती 22:36–40 (साथ में 1 यूहन्ना 3:4); यूहन्ना 8:34–36; 16:8–9; रोमियों 3:23; 6:15–23; 8:18–24; 14:23; 1 यूहन्ना 1:9–2:4; 3:7–10।

कथन 6
प्रायश्चित

हम विश्वास करते हैं कि यीशु मसीह ने क्रूस पर दुःख भोग, लोहू बहाने और मृत्यु का वरण करने के द्वारा सभी मानवीय पापों का प्रायश्चित किया हैं। और यही प्रायश्चित उद्धार पाने का एक मात्र आधार (या कारण) है, और यह आदम के वंश में उत्पन्न प्रत्येक व्यक्ति के उद्धार के लिये पर्याप्त है। यह प्रायश्चित उनके लिये अनुग्रह सहित प्रभावी नहीं है जो नैतिक जिम्मेदारी नहीं उठा सकते और शिशु जो निर्दोष है, परन्तु यह अनुग्रह उनके उद्धार के लिये प्रभावी है जो जिम्मेदारी उठाने में सक्षम हो चुके है परन्तु यह तब ही प्रभावी है जब वे पश्चाताप और विश्वास करे।

यशा. 53:5–6,11; मरकुस 10:45; लूका 24:46–48; यूहन्ना 1:29; 3:14–17; प्रेरितों के काम 4:10–12; रोमियों 3:21–26; 4:17–25; 5:6–21; 1 कुरि. 6:20; 2 कुरि. 5:14–21; गलतियों 1:3–4; 3:13–14; कुलु. 1:19–23; 1 तीमु. 2:3–6; तीतुस 2:11–14; इब्रानियों 2:9; 9:11–14; 13:12; 1 पतरस 1:18–21; 2:19–25; 1 यूहन्ना 2:1–2।

कथन 7
अग्रगामी अनुग्रह

हम विश्वास करते हैं कि मनुष्य जाति के परमेश्वर के स्वरूप की समानता में सृजे जाने में सही और गलत के बीच चुनाव करने की योग्यता भी शामिल हैं, और मनुष्यों को नैतिक रूप से जिम्मेदार बनाया गया था, आदम के पाप में पतन के पश्चात् वे विकृत हो गये और अब वे अपनी स्वाभाविक शक्ति और कार्यों के द्वारा विश्वास और परमेश्वर को पुकारने के लिये वापस नहीं जा सकते और न स्वयँ को तैयार कर सकते है। परन्तु हम यह भी विश्वास करते हैं कि यीशु मसीह में परमेश्वर का अनुग्रह सभी मनुष्यों के लिये दिया गया है, और जो पाप से धार्मिकता की ओर वापस लौटते हैं, क्षमा के लिये और पापों से शुद्ध होने, यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं, और परमेश्वर की दृष्टि में प्रिय एवँ स्वीकार्य 'भले कामों' को करने तैयार है, उन्हें सामर्थ देता है।

हम विश्वास करते हैं कि वे सभी व्यक्ति जिन्होंने पुर्नजीवन और सम्पूर्ण पवित्रीकरण का अनुभव पा लिया है, वे अनुग्रह से गिर सकते है और धर्म का परित्याग कर सकते हैं, यदि वे उनके पापो से पश्चाताप न करे, उनकी दशा निराशाजनक और अनंत विनाश की है।

परमेश्वर के स्वरूप की समानता और नैतिक–जिम्मेदारियाँ, उत्पत्ति 1:28–27; 2:16–17; व्यवस्था विवरण 28:1–2; 30:19; यहोशू 24:15; भजन 8:3–5; यशायाह 1:8–10; यिर्मयाह 31:29–30; यहेजकेल 18:1–4; मीका 6:8; रोमियों 1:19–20; 2:1–16; 14:7–12; गलतियों 6:7–8.

स्वाभाविक अयोग्यता– अय्यूब 14:4; 15:14; भजन 14:1–4; 51:5; यूहन्ना 3:6अ; रोमियों 3:10–12; 5:12–14,20अ; 7:14–25.

निःशुल्क अनुग्रह और विश्वास के काम– यहेजकेल 18:25–26; यूहन्ना 1:12–13; 3:6ब, प्रेरितों के काम 5:31; रोमियों 5:6–8,18; 6:15–16,23; 10:6–8; 11:22; 1 कुरि. 2:9–14; 10:1–12; 2 कुरि. 5:18–19; गलतियों 5:6; इफि. 2:8–10; फिलिप्पियों 2:12–13; कुलु. 1:21–23; 2 तीमु. 4:10 अ; तीतुस 2:11–14; इब्रानियों 2:1–3; 3:12–15; 6:4–6; 10:26–31; याकूब 2:18–22; 2 पतरस 9:10–11; 2:21–22.

कथन 8
पश्चाताप

हम पश्चाताप में विश्वास करते हैं जो पाप के संबंध में मन का सच्चा एंव सम्पूर्ण परिवर्तन है। इसमें व्यक्तिगत रूप में दोष–भावना, और स्वेच्छा से पाप में मन फिराना है, आवश्यक है उन सबके लिये जिन्होंने कार्य या उद्देश्य सहित परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है और पापी बन चुके हैं। परमेश्वर

का आत्मा पश्चाताप करने वालों को पश्चातापी हृदय, दया की आशा के लिये अनुग्रहमय सहायता प्रदान करता है, ताकि वे पापों की क्षमा और आत्मिक जीवन में विश्वास करे।

2 इतिहास 7:14; भजन 32:5–6; 51:1–17; यशा. 55:6–7; यिर्मयाह 3:12–14; यहज्केल 18:30–32, 33:14–16; मरकुस 1:14–15; लूका 3:1–14; 13:1–5; 18:9–14; प्रे.काम 2:38; 3:19; 5:31; 17:30–31; 26:16–18; रोमियों 2:4, 2 कुरि. 7:8–11; 1 थिस्स. 1:9; 2 पतरस 3:9.

कथन 9
धर्मी ठहराया जाना, पुर्नजीवन और लेपालकपन

हम विश्वास करते हैं कि 'धर्मी ठहराया जाना,' परमेश्वर का अनुग्रहमय और न्यायिक कार्य है जिसके द्वारा वह हमें पाप से सम्पूर्ण दोष से क्षमा और किये गये पाप के दण्ड से मुक्ति एवँ धर्मी के रूप में स्वीकृति प्रदान करता है, उन सभों को जो यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं और उसे प्रभु एवँ उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण करते हैं।

हम पुर्नजीवन या 'नये जन्म' में विश्वास करते है जो परमेश्वर के अनुग्रह का कार्य है जिसमें पश्चाताप करने वाले विश्वासी के नैतिक स्वभाव को आत्मिक रूप में जीवित किया जाता है और स्पष्ट आत्मिक जीवन, विश्वास की योग्यता, प्रेम और आज्ञाकारिता प्रदान की जाती है।

हम विश्वास करते हैं कि लेपालकपन परमेश्वर के अनुग्रह का एक कार्य है जो विश्वासी को धर्मी ठहराता, पुर्नजीवित करता और परमेश्वर का पुत्र बनाता है।

हम विश्वास करते हैं कि परमेश्वर को खोजने वालों के अनुभव में 'धर्मी ठहराना,' पुर्नजीवन और लेपालकपन एक साथ आते हैं, वे विश्वास की दशा पर आधारित है, और पश्चाताप करने के बाद के अनुभव है और पवित्रात्मा अनुग्रह की इस दशा और कार्य की साक्षी देता है।

लूका 18:14; यूहन्ना 1:12–13; 3:3–8; 5:24; प्रे. काम 13:39; रोमियों 1:17; 3:21–26,28; 4:5–9, 17–25; 5:1; 16–19; 6:4; 7:6; 8:1, 15:17;

1 कुरि. 1:30; 6:11; 2 कुरि. 5:17–21; गलतियों 2:16–21; 3:1–14,26; 4:4–7; इफिसियों 1:6–7; 2:1, 4–5; फिलि. 3:3–9; कुलु. 2–13; तीतुस 3:4–7; 1 पतरस 1:23; 1 यूहन्ना 1:9; 3:1–2,9; 4:7; 5:1, 9–13,18.

कथन 10
मसीही पवित्रता और सम्पूर्ण पवित्रीकरण

हम विश्वास करते हैं कि पवित्रीकरण परमेश्वर का कार्य है जो विश्वासियों को मसीह की समानता में बदलता है। यह परमेश्वर के अनुग्रह के कारण, आरंभिक पवित्रीकरण या पुर्नजीवन (साथ ही साथ धर्मी ठहराया जाना) में पवित्रात्मा के द्वारा लाया जाता है। संपूर्ण पवित्रीकरण और सिद्धता में लगातार बढ़ने का कार्य पवित्रात्मा करता है जिसका अंतिम लक्ष्य 'महिमाकरण' है। महिमाकरण की दशा में हम पूर्णरूप से पुत्र की समानता के अनुरूप बन जाते हैं।

हम विश्वास करते हैं कि सम्पूर्ण पवित्रीकरण परमेश्वर का कार्य है, पुर्नजीवन के बाद, जिसमें विश्वासी मूल पाप से छुटकारा पाते है या विकृति से छूट जाते हैं और परमेश्वर के प्रति सम्पूर्ण समर्पण की दशा में लाये जाते हैं और प्रेम की पवित्र आज्ञाकारिता में सिद्ध किये जाते है।

यह कार्य बपतिस्में या पवित्रात्मा से भरे जाने के द्वारा सम्पन्न होता है और एक ही अनुभव में पापी को हृदय से दूर करके शुद्धता लाने, पवित्रात्मा के निवास करने, बने रहने और उपस्थिति के कारण विश्वासी को जीवन एवँ सेवा के लिये सामर्थ दी जाती है।

सम्पूर्ण पवित्रीकरण यीशु के लोहू के द्वारा संभव है, और यह विश्वास करने पर अनुग्रह के द्वारा तुरन्त दिया जाता है, और इसके पहिले अवश्य है कि व्यक्ति परमेश्वर के लिये अलग किया जाये, और इस कार्य एवँ अनुग्रह की इस दशा के संबंध में पवित्रात्मा स्वयँ साक्षी देता है।

इस अनुभव को अन्य शब्दों में भी अभिव्यक्त किया जाता है। जैसे कि 'मसीही सिद्धता,' 'सिद्ध प्रेम,' 'हृदय की शुद्धता,' 'पवित्रात्मा का बपतिस्मा या पवित्रात्मा से भरा जाना,' 'आशीषों की भरपूरी' और 'मसीही पवित्रता.'

हम विश्वास करते हैं कि 'शुद्ध हृदय' और 'परिपक्व चरित्र' के बीच एक स्पष्ट अन्तर है। प्रथम सम्पूर्ण पवित्रीकरण का तुरन्त प्राप्त परिणाम है जबकि 'परिपक्व चरित्र' अनुग्रह में बढ़ने का परिणाम है।

हम विश्वास करते हैं कि 'सम्पूर्ण पवित्रीकरण' के अनुग्रह में मसीह के समान शिष्य के रूप में बढ़ने के अनुग्रह के लिये ईश्वरीय अंतःप्रेरणा भी शामिल है। हालांकि इस अंतःप्रेरणा को विवेकपूर्ण ढ़ंग से संवर्धन की आवश्यकता है, और मसीह के समान चरित्र एवँ व्यक्तित्व के लिये आवश्यक बातों और आत्मिक विकास एवँ सुधार (उन्नयन) की प्रक्रियाओं पर सावधानीपूर्वक ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है। बिना उद्देश्यपूर्ण प्रयासों के व्यक्ति की साक्षी निर्बल हो सकती है और अनुग्रह भी कमतर होते–होते अंत में खो सकता है।

अनुग्रह के साधनों में भाग लेकर, विशेष रूप में–सहभागिता, अनुशासन और कलीसिया के संस्कार इत्यादि, विश्वासी अनुग्रह में और परमेश्वर एवँ पडोसियों के प्रति सम्पूर्ण हृदय से प्रेम करने में बढ़ते है।

यिर्मयाह 31:31–34; यहेजकेल 36:25–27; मलाकी 3:2–3; मत्ती 3:11–12; लूका 3:16–17; यूहन्ना 7:37:39; 14:15–23; 17:6–20; प्रे.काम 1:5; 1:1–4; 15:8–9; रोमियों 6:11–13,19; 8:1–14; 12:1–2; 2 कुरि. 6:14; 7:1; गलतियों 2:20; 5:16–25; इफिसियों 3:14–21; 5:17–18; 25–27, फिलि. 3:10–15; कुलु. 3:1–17; 1 थिस्स. 5:23–24; इब्रानियों 4:9–11; 10:10–17; 12:1:2; 13:12; 1 यूहन्ना 1:7–9.

'मसीही सिद्धता,' 'सिद्ध प्रेम'; व्यवस्थाविवरण 30:6; मत्ती 5:43–48; 22:37–40; रोमियों 12:9–21; 13:8–10; 1 कुरि. 13; फिलि. 3:10–15; इब्रा. 6:1; 1 यूहन्ना 4:17–18.

'हृदय की शुद्धता'; मत्ती 5:8; प्रे.काम 15:8–9; 1 पतरस 1:22; 1 यूहन्ना 3:3.

'पवित्रात्मा का बपतिस्मा' यिर्मयाह 31:31–34; यहेजकेल 36:25–27; मलाकी 3:2–3; मत्ती 3:11–12; लूका 3:16–17; प्रे.काम 1:5; 2:1–4; 15:8–9.

आशीषों की भरपूरी – रोमियों 15:29.

मसीही पवित्रता – मत्ती 5:1–7,29; यूहन्ना 15:1–11; रोमियों 12:1–15:3; 2 कुरि. 7:1; इफिसियों 4:19–5:28; फिलि. 1:9–11; 3:12–15; कुलु. 2:20–3:19; 1 थिस्स. 3:13; 4:7–8; 5:23; 2 तीमु. 2:19–22; इब्रानियों 10:19–25; 12:14; 13:20–21; 1 पतरस 1:15–16; 2 पतरस 1:1–11; 3:18; यहूदा 20–21.

कथन 11
कलीसिया

हम विश्वास करते हैं कलीसिया पर, जो यीशु मसीह को प्रभु जानकर अंगीकार करने वालों का समुदाय है, जो परमेश्वर की वाचा के लोग है जिन्हें नयी सृष्टि बनाया है, और परमेश्वर के वचन एवं पवित्रात्मा की बुलाहट में एक साथ मिलकर 'मसीह की देह' कहलाते है।

परमेश्वर ने कलीसिया को बुलाहट दी है कि वे परमेश्वर के जीवन को आत्मा की एकता और सहभागिता में, आराध ना के द्वारा, वचन के प्रचार, संस्कारों का पालन एवँ प्रभु के नाम में सेवकाई के द्वारा, मसीह के प्रति आज्ञाकारिता, पवित्र–जीवन एवँ परस्पर जवाबदेही के द्वारा अभिव्यक्त करे।

संसार में कलीसिया का मिशन, पवित्रात्मा की सामर्थ के द्वारा मसीह की छुटकारे और मेलमिलाप की सेवकाई को बाँटे, प्रचार कर\ कलीसिया इस मिशन को पूरा करने ससु माचार–प्रचार, शिक्षा, तरस के कार्य (राहत के कार्य), न्याय के लिये सामाजिक कार्यों और परमेश्वर के राज्य की साक्षी के द्वारा चेले बनाती है।

कलीसिया एक ऐतिहासिक वास्तविकता है जिसमें सांस्कृतिक स्वरूप के अनुसार संगठन किया जाता है, इसका अस्तित्व स्थानीय है और विश्वव्यापी भी है, यह परमेश्वर के द्वारा विषेश सेवकाईयों के लिये चुने गये व्यक्तियों को नियुक्त (अलग) करती है। परमेश्वर ने कलीसिया को उनके शासन के आधीन बने रहने की बुलाहट दी है जब तक कि हमारे प्रभु यीशु मसीह के वापस लौटकर आने पर विवाह फलीभूत हो।

निर्गमन 19:3; यिर्मयाह 31:33; मत्ती 8:11; 10:7; 16:13–19,24; 18:15–20; 28:19–20; यूहन्ना 19:14–26; 20:21–23; प्रे.काम 1:7–8; 2:32–47; 6:1–2; 13:1; 14:23; रोमियो 2:28–29; 4:16; 10:9–15; 11:13–32; 12:1–8; 15:1–3; 1 कुरिन्थियों 3:5–9; 7:17; 11:1; 17–33; 12:3;12:31; 14:26–40; 2 कुरि. 5:11–6:1; गलतियों 5:6; 13–14, 6:1–5; इफिसियों 4:1–17; 5:25–27; फिलि. 2:1–16; 1 थिस्स. 4:1–12; 1 तीमु. 4:13; इब्रा. 10:19–25; 1 पतरस 1:1–2,13; 2:4–12,21; 4:1–2, 10–11; 1 यूहन्ना 4:19; यहूदा 24; प्रका. वाक्य 5:9–10.

कथन 12
बपतिस्मा

हम विश्वास करते हैं कि बपतिस्में की आज्ञा हमारे प्रभु ने दी है, यह संस्कार यीशु मसीह के प्रायश्चित के कामों के कारण मिलने वाले लाभों को स्वीकार करना दर्शाता है। यह संस्कार विश्वासियों के लिये है, उनके विश्वास की घोषणा के आधार पर यीशु मसीह उनके उद्धारकर्ता है, और यह पवित्रात्मा और धार्मिकता में पूर्ण आज्ञाकारिता के लिये है।

बपतिस्मा नयी वाचा का प्रतीक है, युवा बच्चे भी बपतिस्मा ले सकते हैं यदि उनके माता–पिता या अभिभावक आग्रह करे और संकल्प करे कि वे उन्हें आवश्यक मसीही प्रशिक्षण प्रदान करेंगे।

बपतिस्मा जल का छिड़काव, जल उण्डेलने, जल में डुबोने के रूप में आवेदक के द्वारा चुने गये विकल्प के आधार पर दिया जा सकता है।

मत्ती 3:1–7; 28:16–20; प्रे.काम 2:37–41; 8:35–39; 10:44–48; 16:29–34; 19:1–6; रोमियों 6:3–4; गलतियों 3:26–28; कुलु. 2:12; 2 पतरस 3:18–22.

कथन 13
प्रभु–भोज

हम विश्वास करते हैं कि हमारे प्रभु एवँ उद्धारकर्ता यीशु मसीह के द्वारा उनके स्मरण में निर्धारित प्रभु भोज एक नये नियम का एक आवश्यक संस्कार है। यह उसकी बलिदान स्वरूप मृत्यु का द्योतक है जिसके कारण विश्वासियों को जीवन, उद्धार और मसीह में सभी आत्मिक आशीषों की प्रतिज्ञा प्राप्त होती है। यह स्पष्ट रूप में केवल उनके लिये है जो इसके प्रति आदरभाव रखते हैं और महत्व को मानते हैं और इस संसार के द्वारा जब तक प्रभु वापस न आये, उसकी मृत्यु को दर्शाते है। यह सामुदायिक भोज केवल उनके लिये है जिनका मसीह में विश्वास है और संतों से प्रेम है, केवल उन्हें ही इसमें भाग लेने के लिये आमंत्रित किया जाना चाहिये।

निर्गमन 12:1–14; मत्ती 26:26–29; मरकुस 14:22–25; लूका 22:17–20; यूहन्ना 6:28–58; 1 कुरिन्थियों 10:14–21; 11:23–32

कथन 14
ईश्वरीय चंगाई

हम बाइबिल की ईश्वरीय चंगाई की धर्मशिक्षा पर विश्वास करते है, और हमारे लोगों को बीमारी की चंगाई के लिये 'विश्वास की प्रार्थना' करने का आग्रह करते है। हम यह भी विश्वास करते है कि परमेश्वर औषधि (चिकित्सा) विज्ञान के साधनों के द्वारा भी चंगा करते है।

2 राजा 5:1–19; भजन 103:1–5; मत्ती 4:23–24; 9:18–35; यूहन्ना 4:46–54; प्रे.काम 5:12–16; 9:32–42; 14:8–15; 1 कुरि. 12:4–11; 2 कुरि. 12:7–10; याकूब 5:13–16.

कथन 15
मसीह का द्वितीय आगमन

हम विश्वास करते हैं कि यीशु मसीह फिर आयेंगे, हम जो जीवित है, उनसे जो मसीह में सो गए है, आगे नहीं बढ़ेंगे, परन्तु यदि हम उसमें बने रहेंगे तो हम जी उठे सन्तों के साथ हवा में उठाये जाएंगे और प्रभु से मिलेंगे ताकि हम सदैव प्रभु के साथ ही रहे।

मत्ती 25:31–46; यूहन्ना 14:1–3; प्रे.काम 1:9–11; फिलि. 3:20–21; 1 थिस्स. 4:13–18; तीतुस 2:11–14; इब्रानियों 9:26–28; 2 पतरस 3:3–15; प्रका. वाक्य 1:7–8; 22:7–20.

कथन 16
पुनरूत्थान, न्याय और नियति

हम मृतकों के पुनरूत्थान पर विश्वास करते हैं कि धर्मी और अधर्मी दोनों की देहे जिलाई जायेगी और उनकी आत्माओं के साथ मिल जायेगी– "जिन्होंनें भलाई की है वे जीवन के पुनरूत्थान के लिये जी उठेंगे और जिन्होंनें बुराई की है वे दण्ड के पुनरूत्थान के लिये जी उठेंगे।"

हम भविष्य में न्याय पर विश्वास करते हैं जिसमें प्रत्येक व्यक्ति परमेश्वर के समक्ष प्रस्तुत होगा ताकि इस जीवन में उसके द्वारा किए गए कामों के अनुसार उस का न्याय किया जाये।

हम विश्वास करते हैं कि महिमामय और अनंतकालीन जीवन उन्हें दिया जायेगा जिन्होंनें उद्धार के लिये यीशु मसीह हमारे प्रभु पर विश्वास किया और आज्ञाकारिता के साथ उसका अनुसरण किया है। पश्चाताप न करने वाले लोग नर्क में अनंतकाल तक दुख उठायेंगे।

उत्पत्ति 18:25; 1 शमूएल 2:10; भजन 50:6; यशायाह 26:19; दानिय्येल 12:2–3; मत्ती 25:31–46; मरकुस 9:43–48; लूका 16:19–31; 20:27–38; यूहन्ना 3:16–18; 5:25–29; 11:21–27; प्रे.काम 17:30–31; रोमियों 2:1–16; 14:7–12; 1 कुरि. 15:12–58; 2 कुरि. 5:10; 2 थिस्स. 1:5–10; प्रका. वाक्य 20:11–15; 22:1–15।